सती अंजनासुन्दरी

दक्षिण-पश्चिम समुद्र के तट पर दंती पर्वत पर विद्याधरों के अनेक नगर बसे हुए थे। विद्याधरों की राजधानी थी महेन्द्रपुर। महेन्द्र वहाँ के राजा थे। उनके सौ पुत्र थे, परन्तु पुत्री कोई नहीं थी। एक दिन महारानी हृदयसुन्दरी ने एक कन्यारत्न को जन्म दिया। राजा महेन्द्र खुशी से उछल पड़े। बड़े लाड़-प्यार से कन्या का पालन-पोषण होने लगा।

एक बार कन्या को सुन्दर वस्त्र-आभूषण पहनाकर महारानी महाराज के पास लेकर आई। राजा ने उसे प्यार से अपनी गोद में बिठा लिया–

चाँद-सा मुखड़ा है इसका, इसकी आँखों और गुलाबी गालों पर यह अंजन (काजल) कितना सुन्दर लगता है!

महाराज! बिटिया को किसी की नज़र न लगे, इसलिए हमने अंजन की टिकी लगाई है। पर आप तो अंजन को ही नज़र लगाने लगे।

महाराज ने भी हँसकर उत्तर दिया–

क्या अंजन को किसी की नज़र लग सकती है? चलो, आज से हम बिटिया को भी अंजना कहेंगे ताकि इसको किसी की नज़र न लगे।

नाज-नखरों में पली अंजना धीरे-धीरे सोलह वर्ष की हो गई। उसका निखरा हुआ रूप-लावण्य जो भी देखता, दाँतों तले अँगुली दबा लेता–

वाह ! क्या रूप-लावण्य है, लगता है संसार की सारी सुन्दरता इसी में सिमट गई है।

एक दिन रानी ने राजा महेन्द्र से कहा–

महाराज ! लाड़ली अंजना की जोड़ी का वर तो ढूँढ़िए ! अब वह विवाह योग्य हो चुकी है !

राजा महेन्द्र बोले–

महारानी, बेटी का बाप कभी निश्चिंत बैठता है? मैंने सैकड़ों विद्याधर कुमारों के चित्र मँगवाये हैं, उनकी जन्म-कुंडलियाँ दिखाई हैं, परन्तु क्या करें, हमारी अंजना की जोड़ी का एक भी विद्याधर कुमार नहीं मिला।

तभी एक दूत ने राजसभा में प्रवेश किया–

महाराज ! मंत्री चित्रसेन ने मुझे वर की खोज में भेजा था, मैं कुछ विद्याधर कुमारों के चित्र लेकर आया हूँ।

राजा-रानी उत्सुक होकर दूत की तरफ देखने लगे। दूत ने एक चित्र निकालकर कहा–
महाराज ! यह विद्याधर राजा हिरण्याभ का पुत्र है विद्युत्प्रभ ! रूप-गुण-वय-कला सभी बातों में राजकुमारी अंजना के योग्य है।

राजा ने सभा में बैठे ज्योतिषी की तरफ देखकर कहा–
जरा इस राजकुमार की जन्म-कुण्डली तो देखिये?

ज्योतिषी ने कहा–
महाराज ! विद्युत्प्रभ के बाकी सब ग्रह बलवान हैं, परन्तु इसकी आयु कम है। १८ वर्ष बाद यह दीक्षा लेगा और उसी वर्ष मोक्ष प्राप्त कर लेगा।

रानी ने उदास होकर कहा–
महाराज ! ऐसा वर क्या काम का जो अल्पायु हो!

तब दूत ने दूसरा चित्र निकाला–
राजन् यह आदित्यपुर के पराक्रमी विद्याधर राजा प्रह्लाद की रानी केतुमती का अंगजात पवनंजय कुमार है ! पराक्रम में अष्टापद पर्वत की तरह और आकाश-गमन में गरुड़ की तरह अपराजेय है।